# विमानयानं रचयाम
# (हम वायुयान बनायें)

प्रस्तोता : रवि उपाध्यायः
-प्र.स्ना.शि. (संस्कृत/हिन्दी)
परमाणु ऊर्जा केन्द्रीय विद्यालय-१, तारापुर

# वायुयान का निर्माण करते बालक

# मूलपाठ एवं सरलार्थ

## मूलपाठ

## सरलार्थ

- हे राघव!, हे माधव!, हे सीते!, और हे ललिते! हम विमान बनाएँ | विस्तृत एवं नीले आकाश में वायुयात्रा करें |

# मूलपाठ एवं सरलार्थ

## मूलपाठ

## सरलार्थ

- ऊँचे वृक्ष तथा ऊँचे महल को पार करके हम आकाश में जायें | बर्फ से ढके हुए ऊँचे पर्वतों को सीढ़ी बनाकर हम चंद्रलोक में प्रवेश करें |

# मूलपाठ एवं सरलार्थ

## मूलपाठ

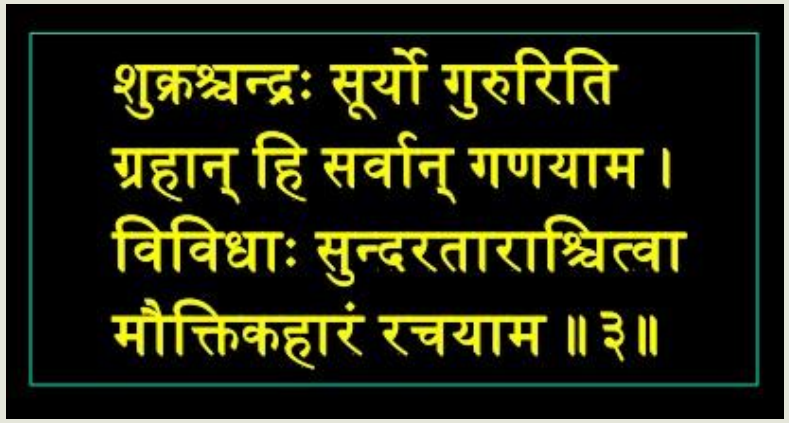


## सरलार्थ

- वहाँ पर हम सब शुक्र, चन्द्र, सूर्य और गुरु आदि सभी ग्रहों को गिनें एवं अनेक प्रकार के तारों को चुनकर मणियों (मोतियों) का हार बनायें |

# मूलपाठ एवं सरलार्थ

## मूलपाठ

## सरलार्थ

- “बादलों की माला” जो आकाश की शोभा है; हम उसको लेकर ही लौटें और दुःखी एवं पीड़ित किसानों के घरों में खुशहाली लायें |